बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 44 ● नई दिल्ली ● सोमवार 24 नवम्बर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

स्मॉग की मोटी चादर से बेहाल दिल्ली, एक्यूआई 381 पार होते ही ग्रैप-4 लागू, सरकार पर उठ रहे सवाल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली रविवार की सुबह घने स्मॉग के साथ उठी। सुबह 7 बजे औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 381 दर्ज किया गया, जो हवा की गुणवत्ता को बहुत खराब श्रेणी में रखता है। यह स्थिति तब है जब दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान IV (ग्रैप) लागू है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, शहर के कई हिस्सों में स्मॉग की मोटी परत छाई हुई थी। हालांकि, शनिवार सुबह के एक्यूआई 359 की तुलना में इसमें मामूली सुधार देखा गया है। बवाना में सबसे ज्यादा प्रदूषण स्तर 435 दर्ज किया गया, जो गंभीर श्रेणी में आता है।

जेएनयू लाइब्रेरी फेस रिकग्निशन सिस्टम पर बवाल, एबीवीपी ने छात्रों के भविष्य पर खतरे की जताई चिंता

नईदिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की डॉ. बीआर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी में फेस रिकग्निशन सिस्टम के तोड़े जाने के बाद बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा है. जेएनयू एबीवीपी के मंत्री प्रवीण ने कहा कि वामपंथी के लोग विश्वविद्यालय का माहौल खराब करना चाहते हैं, इसलिए, सिस्टम को तोड़ दिया है. विश्वविद्यालय प्रशासन आरोपियों पर दंडात्मक कार्रवाई करे.अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जेएनयू मंत्री प्रवीण ने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में वामपंथी के लोग घुसकर तोड़फोड़ कर रहे हैं. पहले तो विश्वविद्यालय ने बिना किसी सूचना के डॉ. बीआर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी में फेस रिकग्निशन सिस्टम लगा दिया था, उसके बाद इसे वामपंथी के लोगों ने तोड़ दिया है. इसका हम लोग विरोध करते हैं. उन्होंने कहा कि फेस रिकग्निशन सिस्टम में तोड़फोड़ सही नहीं है. यह विश्वविद्यालय की पहचान, उसकी शैक्षणिक परंपरा और छात्रों के भविष्य पर हमला है. अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ऐसे किसी भी तत्व को इस कैंपस की शांतिपूर्ण शैक्षणिक संस्कृति को नुकसान पहुंचाने नहीं देगी. उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मांग करता है कि लाइब्रेरी में छात्रों को बैठकर पढ़ने के लिए जगह कम है.

इसे विश्वविद्यालय प्रशासन की तरफ से तत्काल बढ़ाना चाहिए जिससे छात्र बैठकर सही से पढ़ सकें. साथ ही विश्वविद्यालय प्रशासन ने जितना महंगा फेस रिकग्निशन सिस्टम लगवाया था, अगर इसी राशि को छात्रों के लिए पढ़ाई का कमरा या सुविधा में विस्तार करने में लगा देता तो अच्छा होता. प्रवीण ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन लगातार छात्रों की समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रहा है और दूसरे कामों में लगा हुआ है. इसके चलते छात्रों को परेशानी का सामना भी करना पड़ रहा है, लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन चुप बैठा हुआ है. हम लोग यही मांग करते हैं कि जल्द से जल्द इस पर ध्यान दिया जाए और समस्याओं को दूर किया जाए.

मां-बाप-भाई सब इस गफिया, दिल्ली क्राइम ब्रांच ने हेरोइन तस्करी का मास्टरमाइंड तुषार को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। (वेबवार्ता) क्राइम ब्रांच ने ड्रग तस्कर तुषार को गिरफ्तार किया है, जिसे करीब 8 करोड़ रुपये की हेरोइन तस्करी के दो अलग-अलग मामलों में भगोड़ा घोषित किया गया था। वह दोनों मामलों में वॉन्टेड था। पुलिस पहले भी इस गिरोह के कई सदस्यों को गिरफ्तार कर चुकी है। DCP क्राइम ब्रांच हर्ष इंदौरा के मुताबिक, तुषार मूल रूप से संयोग विहार, मटियाला का रहने वाला है। घर से फरार होने के बाद वह फिलहाल महावीर एन्क्लेव, पार्ट-1 में रह रहा था। क्राइम ब्रांच में दर्ज ड्रग तस्करी के एक मामले में रोहिणी में ASJ शिवाजी आनंद की कोर्ट ने 2 जुलाई को उसे भगोड़ा घोषित किया था। उसके गैंग के एक सदस्य से 258 ग्राम हेरोइन बरामद हुई थी। दूसरे मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट के ASJ पुनीत पाहवा की कोर्ट ने भी उसे 17 अक्टूबर को भगोड़ा घोषित किया था। गैंग के एक सदस्य से 512 ग्राम हेरोइन बरामद हुई थी। आरोपी तुषार की पहचान दोनों मामलों में बरामद हेरोइन के सोर्स के तौर पर हुई थी, लेकिन उसे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया था। टेक्निकल सर्विलांस के आधार पर, ACP राजपाल डबास और इंस्पेक्टर सतीश मलिक की टीम ने 23 नवंबर को तुषार को गिरफ्तार किया, जब उसकी लोकेशन महावीर एन्क्लेव की गली नंबर 5 में मिली। उस पर एक दर्जन से ज्यादा केस दर्ज है।

निजी ऑफिसों के लिए दिल्ली सरकार की नई एडवाइजरी जारी, आधे कर्मचारी घर से करें काम

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण का संकट गहराता जा रहा है। लगातार नौवें दिन भी दिल्ली की हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में बनी रही जिसके बाद सरकार को कड़े एहतियाती कदम उठाने पड़े है। इसी के चलते दिल्ली सरकार ने निजी कंपनियों को कहा है कि उनके 50फीसदी कर्मचारी घर से ही काम करें । इस गंभीर स्थिति को देखते हुए, दिल्ली सरकार ने निजी कार्यालयों के लिए तत्काल प्रभाव से एक महत्वपूर्ण सलाह जारी की है। निजी कंपनियों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि उनके 50फीसदी कर्मचारी घर से काम करें । यह कदम सड़कों पर वाहनों की आवाजाही को कम करने और प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों पर नियंत्रण लगाने के उद्देश्य से उठाया गया है। यह एहतियाती उपाय केंद्र के ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान के चरण 3 के तहत आता है। सरकार का यह निर्देश वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के एक औपचारिक निर्देश के बाद आया है। CAQM ने प्रदूषण प्रतिक्रिया ढांचे को और कठोर करते हुए यह निर्णय लिया है। यह सख्ती सर्वोच्च न्यायालय के उन निर्देशों पर आधारित है जिनमें प्रदूषण के खतरनाक स्तर को देखते हुए तत्काल कार्रवाई करने को कहा गया था।

दिल्ली में होगा राष्ट्रीय व्यापारी सम्मेलन, पूरे देश में चलेगी स्वदेशी रथयात्रा

नई दिल्ली। व्यापारियों के संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने पूरे देश में स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देने के लिए रथयात्रा निकालने का निर्णय किया है। इसके लिए दिल्ली में एक दिवसीय राष्ट्रीय व्यापारी सम्मेलन 25 नवंबर को दिल्ली में आयोजित किया गया है जिसमें देश भर के 100 से अधिक व्यापारी नेता भाग लेंगे। इस सम्मेलन में रथयात्रा को लेकर अंतिम निर्णय लिए जाएंगे। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री और भाजपा सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने बताया है कि यह बैठक देश के व्यापारिक परिदृश्य, व्यापारियों की समस्याओं, भविष्य की रणनीति और संगठन को और अधिक मजबूत बनाने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वदेशी बेचो-स्वदेशी खरीदो के आह्वान को देश में कोने कोने तक ले जाने हेतु स्वदेशी संकल्प रथ यात्रा निकाली जाएगी। ऐसा एक रथ महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से होकर अब छत्तीसगढ़ में प्रवेश कर रहे है वहीं एक दिसंबर से दो रथ मध्य प्रदेश में गांव-गांव भ्रमण करेंगे। बैठक में अन्य राज्यों में इसी प्रकार रथ चलाने की योजना तय की जाएगी। इससे देश के सबसे निचले स्तर के श्रमिकों को काम मिलेगा और रोजगार सृजन में सहायता मिलेगी। सम्मेलन में डिजिटलाइजेशन को तेजी से आगे बढ़ाने की दिशा में ठोस कदम तय किए जाएंगे। इसके साथ ही नए व्यापारिक अवसरों की पहचान एवं भविष्य की कार्ययोजना– उभरते बाजारों, ई-कॉमर्स, डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्वस्थ सेक्टर में व्यापार में वृद्धि की संभावनाओं और दिसंबर में दिल्ली में विराट राष्ट्रीय महिला उद्यमी सम्मेलन के आयोजन पर विचार होगा जिसमें महिला व्यापारियों और उद्यमियों को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष राष्ट्रीय सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

दिल्लीवालों अब बढ़ेगी ठंड : 8°C नीचे पहुंचेगा पारा, कोहरे के साथ बढ़ेगी ठिठुरन, अगले छह दिन ऐसा रहेगा मौसम

नई दिल्ली। राजधानी में आने वाले दिनों में न्यूनतम पारा 8 डिग्री सेल्सियस के नीचे पहुंचेगा। ऐसे में लोगों को कड़ाके की ठंड का अहसास होगा। मौसम विभाग के अनुसार, इस दौरान मौसम मुख्यतः साफ रहने का अनुमान है। हालांकि, सुबह के समय हल्की से मध्यम धुंध या कोहरा देखने को मिल सकता है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, 24 से 28 नवंबर तक न्यूनतम तापमान में गिरावट देखने को मिल सकती है, जो 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

28 नवंबर तक ऐसा रहेगा मौसम

मौसम विभाग के अनुसार, सुबह के समय अधिकतर इलाकों में हल्का कोहरा रहेगा, लेकिन दिनभर का मौसम साफ रहेगा। वहीं, 24 और 25 नवंबर को न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है। 26 नवंबर के आसपास न्यूनतम तापमान 8 डिग्री तक पहुंच सकता है और फिर 27 और 28 नवंबर को भी तापमान लगभग 8 से 10 डिग्री के बीच रह सकता है। इस दौरान, आसमान साफ रहेगा। दूसरी ओर, राजधानी में खिली धूप के बावजूद ठिठुरन बढ़ गई है। ऐसे में न्यूनतम के साथ-साथ अब अधिकतम तापमान में भी गिरावट हो रही है। शनिवार को सुबह से ही मौसम में ठंडक घनी हुई थी। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, वैसे-वैसे दिन में सूरज की गर्मी का हल्का अहसास हुआ। इसी बीच अधिकतम तापमान 27.3 डिग्री

सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.6 डिग्री कम रहा।

आया नगर सबसे ठंडा इलाका रहा

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, न्यूनतम तापमान 11.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया, जो मौसम के औसत से 0.5 डिग्री कम है। दिल्ली में अधिकतम आर्द्रता 100 प्रतिशत और न्यूनतम आर्द्रता 40 प्रतिशत रही। वहीं, आया नगर सबसे ठंडा इलाका रहा। यहां न्यूनतम पारा 11.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसके अलावा, लोधी रोड में 12, पालम में 13.2 और रिज में 12.1 न्यूनतम पारा दर्ज किया गया। आईएमडी का अनुमान है कि रविवार को सुबह धुंध व कोहरे के साथ आसमान साफ रहेगा। इस दौरान अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 26 और 11 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

24 से 28 नवंबर तक मौसम रहेगा साफ

24 से 28 नवंबर तक मौसम ज्यादातर साफ रहेगा। हालांकि, सुबह के समय हल्का कोहरा देखने को मिल सकता है। तापमान 23 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा, और हवा की गति हल्की रहेगी। मौसम विभाग के अनुसार, 24 और 25 नवंबर को सुबह के समय हल्का कोहरा होगा, जबकि दिनभर आसमान साफ रहेगा।

26 नवंबर को भी हल्का कोहरा रहेगा, लेकिन दिन में मौसम साफ रहेगा और तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। 27 और 28 नवंबर को भी सुबह हल्का कोहरा रहने की संभावना है, लेकिन दिनभर मौसम साफ रहेगा और तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। हवा की गति 00 से 15 किलोमीटर प्रति घंटे के बीच रहेगी और प्रदूषण स्तर पर नजर रखी जाएगी।

आजाद समाज पार्टी के नेता चंद्रशेखर के बढ़ते असर की काट

उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की नेता मायावती फिर से भाईचारा बनाने की कोशिश में लगी हैं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि यह भाईचारा दलित और ब्राह्मण या दलित और अन्य समाज का नहीं, बल्कि दलित और मुस्लिम का है। बताया जा रहा है कि आजाद समाज पार्टी के नेता चंद्रशेखर के बढ़ते असर की काट में मायावती को यह विकल्प दिख रहा है कि वे असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी के साथ तालमेल करके लड़ें तो उत्तर प्रदेश में अपना जातीय आधार बचा सकती हैं। वे कांग्रेस की ओर से मुस्लिम और दलित को साधने के लिए किए जा रहे प्रयासों को पंक्चर करने के लिए भी इस दिशा में सोच रही हैं। इसलिए उनकी इस योजना को भाजपा का ब्लूप्रिंट माना जा रहा है।

असल में बिहार विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की टिकट पर जीते इकलौते उम्मीदवार ने जीत के बाद मायावती और ओवैसी की तस्वीर के सामने खड़े होकर मीडिया से बात की। बसपा के प्रदेश अध्यक्ष अनिल कुमार भी उनके साथ थे। इससे यह कयास शुरू हुआ है कि बसपा और एमआईएम का तालमेल हो सकता है। ध्यान रहे बिहार में ओवैसी की पार्टी एमआईएम 28 सीटों पर लड़ी थी और उनमें से 20 सीटों पर एनडीए की जीत हुई है। एमआईएम के अपने पांच उम्मीदवार जीते हैं और उन्हें नौ लाख से ज्यादा वोट मिला है। अगर उत्तर प्रदेश में बसपा और एमआईएम साथ आते हैं तो यह कांग्रेस के साथ-साथ समाजवादी पार्टी के लिए भी बड़ा सिरदर्द होगा।

पीके से सवाल पूछने वालों से सवाल?

बिहार में चुनाव के पहले तक मुख्यधारा का जो मीडिया प्रशांत किशोर को एक मजबूत विकल्प के तौर पर पेश कर रहा था, अब वही मीडिया उन पर सवालों की बौछार कर रहा है। चुनाव नतीजों के बाद प्रशांत किशोर अपनी टीम के साथ मीडिया के सामने आए तो मीडियाकर्मी उन पर बुरी तरह टूट पड़े। सबसे ज्यादा सवाल इस बात को लेकर पूछा गया कि उन्होंने कहा था कि नीतीश कुमार को 25 से ज्यादा सीटें आ गईं तो वे राजनीति छोड़ देंगे और अगर जन सुराज पार्टी को साधारण बहुमत जितनी सीटें आती हैं तो वे इसको अपनी हार मानेंगे। उनसे बार-बार पूछा गया कि क्या वे अब राजनीति छोड़ेंगे? प्रशांत किशोर ने इस सवाल का भी जवाब दिया। मगर सवाल मीडिया से भी है कि उसने नीतीश कुमार और अमित शाह से कभी सवाल पूछा? नीतीश कुमार ने जब एनडीए छोड़ कर राजद से गठबंधन किया था तो कहा था कि मिट्टी में मिल जाएंगे लेकिन अब भाजपा के साथ नहीं जाएंगे। लेकिन वे फिर भाजपा के साथ गए। इसी तरह जब उन्होंने भाजपा का साथ छोड़ा तो अमित शाह ने कहा था कि नीतीश के लिए अब भाजपा के खिड़की-दरवाजे सब बंद हैं। लेकिन फिर भाजपा ने लाल कालीन बिछा कर नीतीश का स्वागत किया! क्या किसी ने नीतीश कुमार अमित शाह से इस बारे में सवाल पूछा? पूछा होता तो नीतीश तो फिर भी जवाब दे देते लेकिन अमित शाह से सवाल करने के बारे में तो कोई सोच भी नहीं सकता।

पीएमओ की बात गृह मंत्रालय नहीं मानता!

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दावा है कि अलग गोरखालैंड को लेकर गोरखा समूहों से वार्ता के लिए केंद्र की ओर से नियुक्त वार्ताकार के मामले में प्रधानमंत्री कार्यालय ने राज्य सरकार से वादा किया था कि इस पर विचार किया जाएगा। लेकिन पीएमओ की बात पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने ध्यान नहीं दिया और उसकी ओर से नियुक्त वार्ताकार ने 10 नवंबर को आधिकारिक रूप से वार्ता शुरू करने की घोषणा कर दी। यह बताने के लिए ममता बनर्जी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई थी, जिसमें उन्होंने वार्ताकार की नियुक्ति के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय को लिखी चिट्ठी और उस पर पीएमओ की ओर से आए जवाब की कॉपी भी जारी की। उन्होंने पढ़ कर सुनाया कि पीएमओ की ओर से वार्ताकार की नियुक्ति पर विचार करने को कहा गया था। लेकिन उसके बाद वार्ताकार बनाए गए पूर्व आईपीएस अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने 10 नवंबर को चिट्ठी जारी कर दी। ममता बनर्जी का कहना है कि केंद्र ने राज्य सरकार से सलाह मशविरा नहीं किया गया और एकतरफा तरीके से वार्ताकार की नियुक्ति कर दी, सरकार का यह कदम संविधान में शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का उल्लंघन है।

गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल के उत्तरी हिस्से को अलग राज्य बनाने की मांग का भाजपा के कई नेता समर्थन कर रहे हैं। अगले साल के चुनाव से पहले यह बहुत संवेदनशील मामला है। हालांकि यह दोधारी तलवार की तरह है। भाजपा अगर राज्य के बंटवारे की बात को भी प्रश्रय देती है तो उसे पूरे राज्य में इसका नुकसान उठाना पड़ सकता है।

मणिपुर में सरकार बनाने की कवायद

भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर मणिपुर में सरकार बनाने की कवायद कर रही है। इसी सिलसिले में भाजपा के संगठन महामंत्री बीएल संतोष और पूर्वोत्तर में भाजपा का काम संभाल रहे सांसद संबित पात्रा हाल ही में मणिपुर गए थे। गौरतलब है कि इस साल के शुरू में मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगा हुआ है और विधानसभा निलंबित रखी गई है। लेकिन एक तो विधानसभा अनंतकाल तक निलंबित नहीं रखी जा सकती है और दूसरे डेढ़ साल के बाद विधानसभा का चुनाव होने वाला है। इसलिए भाजपा के नेता इस बात को लेकर परेशान हैं कि वे चुनाव की तैयारी करें या सरकार गठन का इंतजार? पूर्व केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला राज्य के राज्यपाल हैं। राष्ट्रपति शासन लागू करने और उसके बाद हुए कई समझौतों के बाद उनकी राय है कि राज्य में लगभग शांति बहाल हो गई है। लेकिन ऐसा लग रहा है कि केंद्र सरकार और भाजपा दोनों कोई जोखिम नहीं लेना चाहते हैं। एक तो भाजपा में कई खेमे बन गए हैं, जो मुख्यमंत्री पद की दावेदारी कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री एन.बीरेन सिंह भी अपना दावा छोड़ने को तैयार नहीं हैं।

लोकसभा चुनाव में दोनों सीटों पर हार जाने के कारण भाजपा चुनाव को लेकर चिंता में है। इसलिए माना जा रहा है कि अगर सरकार बनाने की संभावना दिखती है तो एक महीने के अंदर सरकार गठन हो जाएगा। अगर सरकार बनाना संभव नहीं हुआ तो विधानसभा भंग हो जाएगी और अगले साल असम के साथ मणिपुर में भी चुनाव होगा।

ज्योतिष की सलाह पर शपथ का समय

बिहार में नीतीश कुमार ने 10वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है लेकिन यह पहली बार हुआ कि उन्होंने ज्योतिष के बताए समय के हिसाब से शपथ ली। पहले नीतीश कुमार को गांधी मैदान में दिन में एक बजे शपथ लेनी थी। लेकिन बाद में उसे बदल कर साढ़े 11 बजे कर दिया गया। राजभवन की ओर से जो निमंत्रण पत्र भेजा गया उसमें एक बजे का समय दिया गया था। बड़ी संख्या में लोगों को एक बजे का निमंत्रण मिल गया। बताया जा रहा है कि बाद में किसी ज्योतिष ने कहा कि एक बजे का समय ठीक नहीं है। ज्योतिष के हिसाब से साढ़े 11 बजे का समय तय किया गया। जब समय बदला तो दोबारा कार्ड छपवाने का समय नहीं था। इसलिए जो निमंत्रण पत्र बाद में भेजे गए उनमें पेन से एक बजे की जगह साढ़े 11 बजे का समय लिखा गया।

इतना ही नहीं ज्योतिष ने सलाह दी कि शपथ साढ़े 11 बजे से शुरू होकर 11 बज कर 50 मिनट तक समाप्त हो जाना चाहिए। यानी शपथ के लिए सिर्फ 20 मिनट का विंडो था। इसलिए पहले कहा जा रहा था कि इस अवधि में मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री की शपथ हो जाए तब भी ठीक है। लेकिन बाद में रास्ता निकाला गया कि मुख्यमंत्री और दोनों उप मुख्यमंत्रियों की शपथ के बाद मंत्रियों को पांच-पांच के बैच में शपथ दिलाई गई और इस तरह 11 बज कर 50 मिनट के विंडो में शपथ का काम पूरा किया गया।

सम्पादकीय...

तनाव ग्रस्त होते छात्र

हाल ही में कई राज्यों में स्कूली छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने की खबरें दुखद तो है ही लेकिन समाज के लिए चिंताजनक भी है। इन घटनाओं के पीछे मुख्य रूप से मानसिक उत्पीड़न और स्कूल में धमकाया जाना कारण बताया जाता है। परीक्षा में फेल होने या परीक्षा में कम अंक प्राप्त करने के डर मात्र से ही बच्चे आत्महत्या करते रहे हैं लेकिन मानसिक उत्पीड़न के चलते आत्महत्याओं का सिलसिला बहुत सारे सवाल खड़े करता है। दिल्ली के एक स्कूल के 16 वर्षीय 10वीं कक्षा के छात्र ने मैट्रो स्टेशन से कूदकर आत्महत्या कर ली। छात्र ने सुसाइड नोट में कुछ शिक्षकों को जिम्मेदार ठहराया और इच्छा जताई कि किसी अन्य छात्र के साथ ऐसा नहीं होना चाहिए। इस मामले में 4 शिक्षकों को निलम्बित कर दिया गया है और पुलिस जांच-पड़ताल कर रही है। जयपुर में चौथी कक्षा की छात्रा ने स्कूल की इमारत से छलांग लगा दी। राजस्थान के एक गांव में 14 वर्षीय बालिका पेड़ से लटकी पाई गई जबकि मध्य प्रदेश में एक 11वीं कक्षा की छात्रा ने अपने घर पर ही आत्महत्या कर ली। इन सभी मामलों में एक बात समान थी कि प्रत्येक बच्चे ने मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया। यह सभी मामले परिस्थितियों से उभरती हुई एक महामारी की तरफ इशारा करते हैं जो स्कूली बच्चों को चरम सीमा की ओर धकेल रहे हैं। इसी वर्ष जुलाई में शीर्ष शिक्षा संस्थानों में दुखद घटनाओं के बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए प्रणालीगत सुधारों पर बल दिया था लेकिन इसके बावजूद इस /दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए। आज हर घटना के साथ हमारी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। हम संवेदनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और करुणामई हो जाते हैं। इस तरह की घटनाएं पूरे समाज की अन्तर्आत्मा को झकझोर कर रख देती हैं लेकिन हम सभी समाधान की ओर बढ़ते नहीं हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या बच्चे आत्महत्या की मनस्थिति में अचानक पहुंच जाते हैं। क्या बच्चे सहनशीलता छोड़ रहे हैं और गुस्सैल होते जा रहे हैं? दूसरी तरफ क्या शिक्षकों का व्यवहार गुस्सैल और आक्रामक होता जा रहा है? अभिभावकों और शिक्षकों को बच्चों के साथ कैसे पेश आना चाहिए ताकि उनके भीतर संवेदनशीलता बची रहे और उनके बेहतर इंसान बनने की राह में कोई बाधा उत्पन्न न हो। इस विषय पर व्यापक मंथन की जरूरत आ पड़ी है। कोई वक्त था बच्चे नोट्स बनाते थे, एक-दूसरे से आदान-प्रदान करते थे, बाहर खेलते थे। लोगों से मिलते, बातें करते थे। वे अपने अनुभवों से काफी कुछ सीखते थे लेकिन अब बच्चे मोबाइल और इंटरनेट पर ही निर्भर हैं। इससे उनका सामाजिक कौशल कमजोर हो रहा है। भागदौड़ भरी जिन्दगी में फंसे अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं होता। बच्चे जो मांगते हैं अभिभावक उन्हें आसानी से लेकर दे देते हैं। ऐसे में बच्चों में एक अधिकार की भावना आ जाती है जो आगे चलकर परेशानी का कारण बनती है। बच्चों का मानसिक विकास बाधित हो रहा है। बच्चों का जल्दबाजी में हर फैसला लेना, किसी भी बात पर तुरन्त प्रतिक्रिया देना, छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित हो जाना या अतिसंवेदनशील हो जाना आदि ऐसी बातें हैं जो बच्चों के लिए फाल्स आइडेंटिटी के तौर पर सामने आता है। दूसरों से अपनी तुलना करने, तुरन्त सब कुछ पा लेने, सहपाठियों के बीच खुद को बेहतर दिखाने की होड़ के चलते बच्चों में कुंठा, तनाव, निराशा, बदला लेने की प्रवृत्ति घर करने लगती है। जब यह भावनाएं बेकाबू हो जाती हैं तो आत्महत्याएं जैसी घटनाएं देखने को मिलती हैं। शिक्षण संस्थानों की बात करें वह तो शिक्षा के शॉपिंग मॉल बन चुके हैं। शिक्षक और प्रिंसिपल का पूरा ध्यान कमाई पर होता है। शिक्षकों का व्यवहार रूखा और आक्रामक होता जा रहा है। बच्चों को बिना वजह डांटा जाता है। कुछ बच्चे स्वभाव से थोड़ा शरारती होते हैं लेकिन शिक्षक उसके स्वाभाविक व्यवहार की ओर ध्यान देने की बजाय उन्हें अपमानित करते हैं। दिल्ली के जिस बच्चे ने आत्महत्या की है उस बच्चे ने सुसाइड नोट में अपने शरीर के अंगदान करने की बात कही है। इससे पता चलता है कि बच्चा कितना संवेदनशील रहा होगा लेकिन किसी ने उस की मनस्थिति पर ध्यान ही नहीं दिया। स्कूल परिसर में कई बच्चे साधारण बातों पर भी या तो आक्रामक हो जाते हैं या फिर भावुक हो जाते हैं। उन्हें सम्भालना या समझाना मुश्किल हो जाता है। अब शिक्षकों, परिवार और समाज को सोचना होगा कि स्कूलों का स्वस्थ वातावरण कैसे बनाया जाए। किशोर से युवा होते बच्चों का कोमल मन-मस्तिष्क किसी जटिल परिस्थिति का विश्लेषण करने में हर बार सक्षम नहीं हो सकता। अगर कोई बच्चा किसी दबाव से गुजर रहा है तो उसे भी पहचाने जाने की जरूरत है। ऐसे कानूनी कदम उठाए जाने चाहिए कि कोई भी शिक्षक छात्रों को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित न कर सके। स्कूलों में मेंटल हैल्थ पर ध्यान दिया जाना चाहिए और उनकी काउंसलिंग की जानी चाहिए ताकि वह भविष्य की जिन्दगी के लिए तैयार हो और मानसिक रूप से मजबूत बन सकें। स्कूल प्रबंधन बच्चों के प्रति संवेदनशील बने न कि उन्हें पैसा उगलने की मशीन के रूप में देखें। जब तक स्कूलों का वातावरण स्वस्थ नहीं होगा तब तक ऐसी दुखद घटनाएं रोकी नहीं जा सकतीं।

'डर': आजादी का सबसे बड़ा दुश्मन

अगर आपने किसी व्यक्ति को स्पीच पढ़ते सुना होता तो आपको लगता कि ये शब्द बाल गंगाधर तिलक या जवाहरलाल नेहरू या जयप्रकाश नारायण या नेल्सन मंडेला के हैं और आप गलत हो। स्पीकर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी थे। ये शब्द उन रिपोर्टरों के लिए संगीत की तरह होंगे जिन्होंने 11 साल तक प्रधानमंत्री से प्रैस कांफ्रैंस करवाने की बेकार कोशिश की है। वे उम्मीद कर सकते हैं कि आखिरकार मोदी लाइव टैलीविजन प्रैस कांफ्रैंस में पत्रकारों के सवालों का जवाब न देने का अपना इरादा तोड़ देंगे। ये शब्द संपादकीय लिखने वालों को भरोसा दिलाएंगे कि उन्हें हमेशा चौकन्ना रहने और 'एक तरफ ' और 'दूसरी तरफ ' जैसे शब्दों से भरे 'बैलेंस्ड' संपादकीय लिखने की जरूरत नहीं है। ये शब्द शरारती कलाकार को अपनी पैंसिल निकालने और ऐसे कार्टून बनाने के लिए मोटिवेट करेंगे। 'किसी को नहीं बख्शेंगे, प्रधानमंत्री को भी नहीं'। ये शब्द उन संपादकों के लिए हिम्मत बढ़ाने वाले होंगे जिन्होंने कई कहानियों को 'दफना' दिया है और यह दुआ की है, 'रीडर मुझे माफ करना, मुझे पता है मैं क्या करता हूं'।

हिम्मत को सलाम– मिस्टर मोदी के शब्द सच में इंस्पायरिंग थे। रामनाथ गोयनका का मोटो था हिम्मत वाली पत्रकारिता। यह उस अखबार का मोटो बन गया जिसे उन्होंने शुरू किया था और हर दिन वही शब्द उसके हैडलाइन पर छपते थे। रामनाथ गोयनका की तारीफ करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, ''रामनाथजी ब्रिटिश जुल्म के खिलाफ मजबूती से खड़े रहे। अपने एक एडिटोरियल में उन्होंने कहा था कि वह ब्रिटिश ऑर्डर मानने की बजाय अपना अखबार बंद करना पसंद करेंगे। इसी तरह, जब इमरजैंसी के रूप में देश को फिर से गुलाम बनाने की कोशिश की गई तो रामनाथजी मजबूती से खड़े रहे। और इस साल इमरजैंसी लागू हुए 50 साल हो गए हैं। ठीक कहा लेकिन आज मीडिया की असलियत क्या है? भारत के बड़े अखबार आजादी की लड़ाई की भट्ठी में तपकर बने हैं। बहुत कम लोगों ने सोचा होगा कि आजादी के 78 साल बाद उन्हें 'गोदी मीडिया' शब्द बनाना पड़ेगा। हजारों की संख्या में पढ़ने वाले और देखने वाले उन्हें छोड़कर चले गए, फिर भी कई अखबार और चैनल सरकारी मदद की वजह से फल-फूल रहे हैं। मिस्टर मोदी ने आगे कहा, ''50 साल पहले, इंडियन एक्सप्रैस ने दिखाया था कि खाली एडिटोरियल भी गुलाम बनाने वाली सोच को चुनौती दे सकते हैं। ये कहानियां हमें बताती हैं कि रामनाथजी हमेशा सच के साथ खड़े रहे, हमेशा ड्यूटी को सबसे ऊपर रखा चाहे उनके खिलाफ खड़ी ताकतें कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हों।''

कड़वी सच्चाई– चौथे स्तंभ की प्रेरणा देने वाली कहानियों ने कहानियों की एक अलग शैली को जगह दी है। उदाहरण के लिए, एक एडिटर की कहानी है जिसे उसके कॉन्ट्रैक्ट के बचे हुए सालों की सैलरी का चैक दिया गया और दिन के आखिर तक अपनी डैस्क खाली करने को कहा गया। एक एंकर की कहानी है जिसके टैलीविजन पर सबसे ज्यादा व्यूअरशिप थी, जिसे चैनल का मालिक बदलने पर अपना बैग पैक करने को कहा गया, जिसे इंडस्ट्री में आधी रात का तख्तापलट माना जाता है। पिछले 10 सालों में कई मशहूर पत्रकारों की चौंकाने वाली कहानियां हैं, जिन्होंने अपनी नौकरी खो दी और आज भी उन्हें नौकरी नहीं मिल पा रही है।

कुछ दिन पहले, मिस्टर यशवंत सिन्हा ने प्रैस क्लब ऑफ इंडिया में एक मीटिंग की कहानी सुनाई, जिसमें उन्हें एक स्पीच देने के लिए बुलाया गया था। स्पीच के बाद, पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने हल्के से उन्हें डांटा कि वे कभी-कभी उनकी कही बातों को प्रकाशित न करें। सब चुप थे लेकिन एक युवा पत्रकार बोला। उसने कहा, ''सर, मैं आपकी बातों को रिपोर्ट करूंगा। अगर मेरी नौकरी चली गई तो क्या आप मेरे लिए एक नौकरी ढूंढ देंगे?'' मिस्टर सिन्हा ने कहा कि वह हैरान रह गए और बस इतना कहा, ''युवक, प्लीज अपनी नौकरी बचा लो।'' मेरे पास भी एक कहानी है। सर्दियों की एक ठंडी शाम को मैं एक पत्रकार के साथ एक छोटे से रैस्टोरैंट में डिनर कर रहा था। रात करीब 10 बजे, उन्हें उनके ऑफिस से फोन आया। उन्हें तुरंत अपने घर वापस जाने के लिए कहा गया, जहां एक ओ.बी. वैन इंतजार कर रही थी। उनका काम पहले से तैयार बयान पढ़ना था। उन्होंने तुरंत माफी मांगी और जाने के लिए तैयार हो गए। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने मना क्यों नहीं किया और अपने बॉस से कहा कि वह यह काम किसी दूसरे रिपोर्टर को दे दें जो पहले से ही घर पर था। उन्होंने गंभीरता से कहा, ''मेरे माता-पिता हैं, दोनों बूढ़े हैं और मुझ पर निर्भर हैं और मेरे घर की ई.एम.आई. बाकी है।'' वह बहुत माफी मांगते हुए चले गए। कुछ पत्रकार लालच में जीते हैं और कामयाब होते दिखते हैं। दूसरे डर में जीते हैं। लालच में जीते लोग इस बिजनैस में सबसे ज्यादा चिल्लाते हैं, चीखते हैं, गाली देते हैं और अजीब कहानियां बनाते हैं। उदाहरण के लिए, 'ऑप्रेशन सिंदूर' के दौरान, कुछ पत्रकारों ने यह कहानी चलाई कि भारतीय नौसेना के जहाजों ने कराची पोर्ट को घेर लिया है और भारतीय सैनिक कराची शहर में घुसने वाले हैं!

डर या आजादी– मिस्टर सिन्हा, मैंने और दूसरों ने जो कहानियां सुनाई हैं वे उस डर को दिखाती हैं जो पूरे 'फोर्थ एस्टेट' में फैला हुआ है। मेरा यकीन मानिए, जानकार लोगों ने जो मुझे बताया है और जो मैंने इकट्ठा किया है, उसके हिसाब से एक अनदेखा सैंसर है, सभी बड़े अखबारों और टैलीविजन चैनलों पर 24 गुणा 7 मॉनिटरिंग होती है। एडिटर्स को चुपके से फोन कॉल किए जाते हैं, एडवाइजरी होती है और अगर उन्हें नजर अंदाज किया जाए तो परेशानी होती है।

कई कहानियां पैदा ही नहीं होतीं, कई खत्म हो जाती हैं। ऐसा लगता है कि सिर्फ भारतीय भाषाओं के छोटे मीडिया आऊटलैट ही बचे हैं, हिंदी मीडिया को छोड़कर। डर आजादी का सबसे बड़ा दुश्मन है। भारत में या तो डरपोक प्रैस हो सकता है या फिर आजाद प्रैस।

नई भाजपा का शाही सफर : एक दशक में सत्ता और संगठन का नया मॉडल

भाजपा अध्यक्षों के कार्यकाल में विस्तार का फार्मूला, पार्टी का ऐसा सोचा समझा निर्णय है, जिसे एक दशक में 2 किले भेदने की रणनीति के तौर पर देखा गया है। पहला, भगवा चुनावी साम्राज्य मॉडल विस्तार करना और दूसरा, संगठन की स्थिरता के साथ गठबंधन की मार्फत, उन क्षेत्रों का विस्तार करना जहां भाजपा की उपस्थिति ही नहीं है। बिहार की जीत का 'नया मॉडल' इसका ताजा उदाहरण है। करीब 45 वर्ष के भारतीय जनता पार्टी के कुल कार्यकाल में, पिछले एक दशक में जैसे सामाजिक आधार को राजनीतिक स्थिरता ने भाजपा को 2 भागों में बांट दिया- 'पुरानी भाजपा' और 'नई भाजपा'। नई भाजपा का दौर राजनाथ सिंह, अमित शाह व जे.पी. नड्डा के कार्यकाल को माना जा सकता है। भाजपा का नया रूप व नई रणनीति को समझना बिहार चुनावों के बाद, इसलिए महत्वपूर्ण बन जाता है, जब इसके बाद भाजपा का अगला निशाना पश्चिम बंगाल और साऊथ के राज्यों में चुनाव का है। पृष्ठ भूमि में बता दें कि 6 अप्रैल 1980 को भाजपा के जन्म के बाद , अमित शाह पार्टी के 14वें राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। इससे पहले राजनाथ के रहते ही नरेंद्र मोदी पहली बार प्रधानमंत्री बने,फिर पार्टी की कमान अमित शाह ने संभाल ली। ऐसा नहीं कि भाजपा के अध्यक्षों का कार्यकाल सिर्फ 3 साल तक सीमित रहा। आडवाणी 6 वर्ष तक अध्यक्ष रहे। फिर दोबारा दो साल के करीब रहे। राजनाथ 2 बार अध्यक्ष रहे और करीब 5 साल काम देखा। लेकिन शाह से पहले तक की भाजपा विचार आधारित, कैडर संचालित व सीमित भौगोलिक प्रभाव वाली थी। मसलन 2013 में भाजपा सिर्फ 5 राज्यों (गठबंधन सहित) तक सीमित थी। 2009 में तो पार्टी का वोट शेयर मात्र 18.6 प्रतिशत तक था और लोकसभा में मात्र 116 सीटें। लेकिन शाह के आने से लेकर नड्डा के दौर की 11 साल की अवधि में भाजपा का स्वरूप पूरी तरह परिवर्तित हो गया। इससे पहले चुनावी गठबंधन सीमित था। आर.एस.एस. कैडर आधारित पार्टी थी। अयोध्या, स्वदेशी व अनुशासन के मुद्दों से आगे नहीं बढ़ी थी। तब की भाजपा और आज की भाजपा को 'शाह' के समय में पूरा बदला गया और इसे आगे बढ़ाया नड्डा ने। लेकिन इस नई भाजपा के शाह व नड्डा के कार्यकाल में भी तुलनात्मक कारगुजारी में अंतर रहा। परंतु पार्टी का अब तक का सबसे शक्तिशाली दौर अमित शाह का रहा। जिसमें पार्टी के चुनावी साम्राज्य में सबसे तेज विस्तार हुआ। भाजपा ने 'शाही धमक' के साथ देश में भगवा फहराया। 2014 के लोकसभा में पार्टी 282 सीटों पर थी, फिर 2019 में 303 सीटों पर आ गई। जबकि एन.डी.ए. सहित 350 क्रास कर गई। यह सामान्य बात नहीं थी। शाह के दौर में भाजपा 2014 में 7 राज्यों से बढ़कर, 2020 में 19 राज्यों तक आ गई। इसमें यू.पी. में (2017 में) अब तक की सबसे बड़ी जीत 312 सीटों के साथ भाजपा आई तो 2016 में असम में पहली बार पार्टी ने सरकार बनाई। फिर 2018 में त्रिपुरा में लेफ्ट की 25 साल पुरानी सरकार हटाई। यह पुरानी भाजपा नहीं कर पाई थी। शाह की अध्यक्षता में भाजपा ने अपनी हारों से बहुत कुछ सीखा और फिर रणनीति बदली। 2015-2020 में दिल्ली हारी, पंजाब हारा, राजस्थान व छत्तीसगढ़ के बड़े झटके भी लगे। लेकिन फिर भाजपा ने राष्ट्रीय व राज्यों के विस्तार की तीव्र गति से रणनीति बदल ली।

आरजेडी बनाम एनडीए की टकराहट

बिहार विधानसभा चुनाव के आए हैरत अंगेज नतीजों के बाद बिहार की राजनीति एक बार फिर से परिवारवाद के आरोपों के इर्द-गिर्द घूमने लगी है। नई सरकार के गठन के बाद 21 नवंबर 2025 की देर श्याम जिस तरह से आरजेडी ने मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री पर तीखे सवाल दागे हैं,उसी तीव्रता से बीजेपी ने भी जवाबी हमला करके पूरे राजनीतिक विमर्श को नई दिशा की ओर मोड़ दिया है। बिहार में सत्ता परिवर्तन के हर चरण के साथ परिवारवाद का मुद्दा किसी धधकते अंगारे की तरह सामने आता रहा है,कभी शांत, तो कभी भड़कता हुआ। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह बहस महज राजनीतिक रणनीति नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र के भीतर वंशवाद बनाम योग्यता के बड़े विमर्श का हिस्सा है, जो दशकों से विभिन्न राज्यों में अलग-अलग रूपों में सामने आता रहा है।नई सरकार के शपथ ग्रहण के बाद आरजेडी ने जिस आक्रामक अंदाज में नीतीश कुमार और प्रधानमंत्री मोदी को घेरा,उससे यह साफ हो गया कि आने वाला राजनीतिक सीजन सिर्फ विकास या प्रशासनिक मुद्दों पर नहीं, बल्कि सत्ता में कौन और क्यों शामिल है,इस सबसे संवेदनशील प्रश्न पर भी केंद्रित होगा।आरजेडी ने कहा कि परिवारवाद पर सबसे ज्यादा शोर मचाने वाले अब स्वयं उसी प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हैं, इसलिए उन्हें अपने ही आरोपों का जवाब देना चाहिए। यह हमला इसलिए भी तीखा माना गया क्योंकि आरजेडी ने सीधे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री जैसे दो शीर्ष पदों को इस बहस के केंद्र में रख दिया।आरजेडी का तर्क स्पष्ट है,यदि हमारी पार्टी पर वर्षों से परिवारवाद के आरोप लगाए जाते रहे हैं, तो फिर वही कसौटी उन लोगों पर क्यों न लागू की जाए जो इस मुद्दे को नैतिकता और राजनीतिक शुचिता के चश्मे से देखने की बात करते हैं? इस आरोप के उठने भर से बिहार का राजनीतिक माहौल गरमाना स्वाभाविक था। साथियों बात अगर हम कैबिनेट गठन के बाद बढ़ेविवाद कौन किसका बेटा की सूची और बयानबाजी की तीक्ष्णता को समझने की करें तो,नीतीश सरकार के नए मंत्रिमंडल ने जैसे ही शपथ ली,आरोपों की नई परतें खुलनी शुरू हो गईं। आरजेडी ने मंत्रियों की एक सूची जारी की, जिसमें दिखाया गया था कि नए कैबिनेट के कई चेहरे किसी न किसी रूप में राजनीतिक परिवारों की अगली पीढ़ी से आते हैं,कोई पूर्व मुख्यमंत्री का बेटा, कोई पूर्व मंत्री का वारिस, कोई जिला स्तर के शक्तिशाली परिवार का सदस्य।आरजेडी का तर्क था कि यही वही तत्व है जिसे एनडीए परिवारवाद का विरोध कहकर चुनावी मंचों पर चुनौती देता रहा है।यह सूची जारी होते ही राजनीतिक तापमान और बढ़ गया। आरोप और प्रत्यारोप इस कदर गहरे हो गए कि बहस अब राजनीतिक समीकरणों से निकलकर राजनीतिक नैतिकता और सिद्धांतों के बड़े दायरे में पहुंच गई। आरजेडी ने कहा कि जो लोग चुनावों में वंशवाद के खिलाफ क्रांति की बात करते थे, अब वही अपने शासन में परिवारों को ही सबसे बड़ी भूमिका दे रहे हैं। साथियों बात अगर हममंत्रिमंडल में जगह पाए इस परिवारवादी सूची तथा व्यंग्य, कहावतें और राजनीतिक कटाक्ष,बिहार की सियासत की सदाबहार शैली को देखकर समझने की करें तो (1) संतोष सुमन- पूर्वसीएम व गया से सांसद और वर्तमान केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी का पुत्र, वर्तमान विधायक ज्योति मांझी का दामाद और वर्तमान विधायक दीपा मांझी का पति संतोष सुमन मांझी (2) सम्राट चौधरी-पूर्व मंत्री शकुनी चौधरी और पूर्व विधायक दिवंगत पार्वती देवी का उपमुख्यमंत्री पुत्र सम्राट चौधरी। (3) दीपक प्रकाश-पूर्व केंद्रीय मंत्री, वर्तमान राज्यसभा सांसद उपेंद्र कुशवाहा और वर्तमान विधायक स्नेहलता का पुत्र दीपक प्रकाश। (4) श्रेयसी सिंह- पूर्व केंद्रीय मंत्री दिग्विजय सिंह और पूर्व सांसद पुतुल कुमारी की पुत्री श्रेयसी सिंह।(5) रमा निषाद -पूर्व केंद्रीय मंत्री कैप्टन जय नारायण निषाद की बहू और पूर्व सांसद अजय निषाद की पत्नी रमा निषाद। (6) विजय चौधरी- पूर्व विधायक जगदीश प्रसाद चौधरी का पुत्र विजय चौधरी। (7) अशोक चौधरी-पूर्व मंत्री महावीर चौधरी का पुत्र और समस्तीपुर की वर्तमान सांसद शाम्भवी चौधरी का पिता अशोक चौधरी (8) नितिन नवीन-पूर्व विधायक नवीन किशोर सिन्हा का पुत्र नितिन नवीन।(9)सुनील कुमार- पूर्व मंत्री चन्द्रिका राम का पुत्र और पूर्व विधायक अनिल कुमार का भाई सुनील कुमार। (10) लेसी सिंह-समता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष दिवंगत भूटन सिंह की पत्नी लेसी सिंह। व्यंग्य, कहावतें और राजनीतिक कटाक्ष, बिहार की सियासत कीसदाबहार शैली-बिहार की राजनीति में व्यंग्य हमेशा ही बहस का एक प्रमुख हथियार रहा है। आरजेडी ने परिवारवाद पर अपने हमले को और तीखा करनेके लिए प्रसिद्ध कहावतों और दोहों का इस्तेमाल किया।वर्तनों की पालकी उठवाए चारों दिशाम, फिर दूसरों के जीति पर दे कैसो वो ज्ञान इसी तरह आरजेडी ने सबको परिचित कहावत का सहारा लिया- -जिनके सूप ही हजारों छेद है, वो चलनी पर क्या सवाल खड़े करेंगे।-ये पंक्तियां केवल शाब्दिक कटाक्ष नहीं थीं, बल्कि यह संकेत भी थीं कि राजनीतिक बहस अब तर्क के स्तर से भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रतीकों के स्तर पर जा चुकी है। बिहार जैसे राज्य, जहां लोककथाएँ और कहावतें सामाजिक चेतना का हिस्सा है, वहां इस प्रकार के व्यंग्य राजनीतिक प्रभाव को कई गुना बढ़ा देते हैं। साथियों बात अगर हम एनडीए का पलटवार,परिवारवाद की 'नई परिभाषा' और राजनीति की बदलती भाषा को समझने की करें तो, जैसे ही आरजेडी के आरोपों ने गति पकड़ी, वैसे ही एनडीए नेताओं का जवाब भी तेजी से सामने आया। बीजेपी के वरिष्ठ नेता दिलीप जायसवाल ने सीधे तौर पर कहा कि विपक्ष आज तक परिवारवाद की परिभाषा समझ ही नहीं पाया है। उनके अनुसार, परिवारवाद केवल मंत्री या विधायक का बेटा मंत्री बनने तक सीमित नहीं है परिवारवाद का असली अर्थ है,जब कोई प्रधानमंत्री का बेटा प्रधानमंत्री बने, मुख्यमंत्री का बेटा मुख्यमंत्री बने,और सत्ता पूरी तरह वंशगत विरासत में बदल जाए।उनका संकेत स्पष्ट रूप से कांग्रेस,समाजवादी पार्टी और आरजेडी की ओर था। वे कह रहे थे कि नरेंद्र मोदी, नीतीश कुमार, या भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व में परिवारवाद का कोई स्थान नहीं है, इसलिए आरजेडी के आरोप निराधार हैं।एनडीए की यह -नई परिभाषा- राजनीतिक बहस के नए विमर्श की तरह सामने आई। अब सवाल केवल पद पाने का नहीं, बल्कि सत्ता के शीर्ष वंश के जन्मगत अधिकारों का बनाम जनता के प्रतिनिधि चुनाव से मिलने वाली वैधता का बन गया। साथियों बातें अगर हम सोशल मीडिया पर बहस समर्थन तंत्र और राजनीतिक ध्रुवीकरण को समझने की करें तो, राजनीति का हर मुद्दा अब सोशल मीडिया पर तुरंत ही ट्रेंड बन जाता है, और परिवारवाद का मुद्दा भी इससे अलग नहीं रहा।

आरजेडी समर्थकों ने जैसे ही कैबिनेट में शामिल -परिवारवाद के चेहरे- वाली सूची सामने रखी, कई यूजर ने इसे -एनडीए का दोहरा चेहरा- बताया। उनका कहना था कि भाजपा परिवारवाद को लेकर केवल उन दलों पर उंगली उठाती है,जिनसे उसका वैचारिक विरोध है, लेकिन जब बात सहयोगी दलों या अपनी सरकार के मंत्रियों की हो, तो वही मापदंड गायब हो जाते हैं।वहीं दूसरी तरफ एनडीए समर्थकों ने इस पूरे विवाद को -हार के बाद की निराशा- बताया। उनका तर्क था कि जिन दलों को जनता ने बार-बार अस्वीकार किया, वे अब उन्हीं मुद्दों को उछालकर अपनी खोई ज़मीन तलाश रहे हैं, जिन पर जनता अब भरोसा नहीं करती। सोशल मीडिया की यह दोहरी प्रतिक्रिया इस बात का संकेत है कि बिहार की राजनीति केवल विधानसभा या संसद के मंच तक सीमित नहीं है; यह हर मोबाइल स्क्रीन का मुद्दा और हर मतदाता की भावनात्मक दुनिया का हिस्सा बन चुकी है। साथियों बात अगर हम परिवारवाद पर बहस का गहरा पक्ष,लोकतंत्र, अवसर और बदलता राजनीतिक समाज इसको समझने की करें तो,परिवारवाद की बहस केवल बिहार की राजनीति तक सीमित नहीं है; यह भारत की राजनीतिक संस्कृति का बड़ा प्रश्न है। लोकतंत्र का आधार समान अवसर और योग्यता है,जबकि वंशवाद इसेसीमित करता है। लेकिन भारतीय राजनीति में परिवारवाद का दूसरा पहलू भी है,राजनीतिक परिवारों की सामाजिक पहुंच, नेटवर्क और वर्षों का अनुभव कभी-कभी उन्हें चुनावी राजनीति के प्राकृतिक खिलाड़ी बना देता है।यही कारण है कि भारत के लगभग हर राज्य में, चाहे वह तमिलनाडु हो, उत्तर प्रदेश हो, या पंजाब, राजनीतिक परिवार अपनी भूमिका बनाए रखते हैं। बिहार भी इससे अलग नहीं है।वर्तमान बहस यही सवाल उठाती है कि क्या राजनीति में परिवारवाद स्वाभाविक है या इसे चुनौती देने की आवश्यकता है?

क्या राजनीतिक परिवारों का होना अपने आप में समस्या है, या समस्या तब पैदा होती है जब निर्णय केवल वंश के आधार पर लिए जाते हैं और योग्यता को नजरअंदाज कर दिया जाता है? एनडीए और आरजेडी का मौजूदा विवाद इसी बड़े प्रश्न का छोटा रूप है। साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम का उल्लेख और बहस का राष्ट्रीय विस्तार इसको समझने की करें तो,जब भी परिवारवाद की बात होती है, भारतीय पीएम का विशेष उल्लेख होता है क्योंकि उन्होंने कई चुनावों में परिवारवाद को राष्ट्रीय राजनीति की सबसे बड़ी बीमारी बताया है।आरजेडी का यह दावा कि बिहार के कैबिनेट में परिवारवाद के उदाहरण मौजूद हैं, और पीएम को इसका जवाब देना चाहिए,इस बहस को तुरंत राष्ट्रीय राजनीति के स्तरपर ले आया।पीएम हमेशा यह कहते रहे हैं कि उनका परिवार 130 करोड़ भारतीय हैं। यही कारण है कि बीजेपी यह तर्क देती है कि मोदी के नेतृत्व में परिवारवाद के आरोप बेमानी हैं। लेकिन विपक्ष के अनुसार, परिवारवाद शब्द का राजनीतिक उपयोगकेवल विरोधियों को बदनाम करने के लिए किया जाता है, न कि अपने गठबंधन के भीतर लागू करने के लिए। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि परिवारवाद के आरोपों से उठा सियासी तूफान-आरजेडी बनाम एनडीए की टकराहट,परिवारवाद की बहस केवल बिहार की राजनीति तक सीमित नहीं;यह भारत की राजनीतिक संस्कृति का बड़ा प्रश्न है,वंशवाद,लोकतंत्र का आधार, समान अवसर और योग्यता को सीमित करता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने [illegible] ऑफसेट प्रिंटर्स, [illegible] दिल्ली से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/570, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया संपादक : विजय कुमार शास्त्री, मो : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं, विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। [illegible]

पदयात्रा निकालकर माय भारत की युवाओं ने किया जागरूक

मुरादाबाद।

मेरा भारत मुरादाबाद युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में तीसरी जनपद स्तरीय पदयात्रा का आयोजन रविवार को जनपद में किया गया इस पदयात्रा का आयोजन माय भारत के द्वारा कराया गया। पदयात्रा रामगंगा बिहार स्थित टी.डी.आई सोसाइटी से आरम्भ होकर सीएल गुप्ता वर्ल्ड स्कूल अंबेडकर पार्क विकास भवन सेम होते हुए मोरा की मिलक पर संपन्न हुई इस पदयात्रा में लगातार युवाओं ने लगभग 9 किमी का सफर तय किया और इस पदयात्रा में 3000 से अधिक लोगों ने प्रतिभाग किया पदयात्रा के दौरान उप निदेशक अंकित कुमार गौर उपस्थित रहे उनके साथ उनके विभाग के समस्त स्टाफ चंद्रसिंह, रंजीत कुमार, एवं अन्य सदस्यों ने नेतृत्व किया पदयात्रा में कई विशिष्ट अतिथि

सम्मिलित हुए जिनमें मुख्य मुख्य रहे प्रभारी मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार से धर्मबीर एवं भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष महामंत्री समेत अनेक पदाधिकारी भी इस यात्रा का हिस्सा रहे युवाओं ने इस पदयात्रा में शामिल होकर जनमानस को भारत के प्रथम गृहमंत्री लोहपुरुष के पदचिह्नों पर चलने के लिए आह्वान किया पदयात्रा में शामिल युवा राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने स्वयं अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित करने का संकल्प लिया इस पदयात्रा के साथ पुलिस प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के लोग भी शामिल रहे और उप निदेशक अंकित कुमार गौर ने सभी प्रशासनिक इकाइयों को पदयात्रा को सुचारू रूप से संपन्न करवाने में मदद के लिए धन्यवाद कहा कार्यक्रम सहायक रंजीत कुमार सैनी ने पदयात्रा के बारे में बताया कि पदयात्रा से लोगों को स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत एवं आयुष्मान उज्ज्वला व अन्य सरकार की महत्वपूर्ण योजना के बारे में भी जागरूक किया गया पदयात्रा मोरा की मिलक संपन्न हुई जहाँ युवाओं को माननीय मंत्री गणमान्य लोगों ने संबोधित किया।

मजदूरी का पैसा मांगने पर मजदूर युवक को पिटा, छीना 2500 सौ रुपया

दबंग ने कहा कि सरकारी सोलर लाइट लगवाए हैं तुम्हारे यहां इसलिए पैसा नही देगे

मेजा प्रयागराज। मेजा थाना क्षेत्र में मजदूरी का पैसा मांगने पर एक युवक की पिटाई का मामला सामने आया है। पीड़ित राजेश कुमार पुत्र रामधनी विश्वकर्मा निवासी ग्राम केवटहिया (रामनगर) थाना मेजा जनपद प्रयागराज ने मेजा थाने में तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। यह घटना गुरुवार शाम लगभग 7 बजे रामनगर बाजार स्थित मंजूर सैलून की दुकान पर हुई। केवटहिया (रामनगर) ग्राम पंचायत निवासी राजेश कुमार पुत्र रामधनी विश्वकर्मा ने जब सैलून में शेविंग कराने पहुंचे, तो वहां पहले से मौजूद रामनगर बाजार निवासी शंकर लाल केशरी पुत्र गणेश केशरी से उनका सामना हुआ।राजेश कुमार ने शंकर लाल से अपने बकाया मजदूरी के 5000 रुपये मांगे। राजेश का कहना था कि उसने दो साल पहले शंकर लाल के यहां सोफा सेट बनवाया था, जिसके 5000 रुपये बकाया थे। इस पर शंकर लाल केशरी ने कहा कि राजेश के यहां सरकारी सोलर लाइट लगवाई थी, इसलिए वह मजदूरी नहीं दुगा। पैसे मांगने पर शंकर लाल ने राजेश कुमार को पकड़कर पीटना शुरू कर दिया। दुकान पर मौजूद अन्य लोगों ने बीच-बचाव कर राजेश कुमार को बचाया। शंकर लाल केशरी ने राजेश कुमार के जेब से 2500 सौ रुपया जेब से जबरन निकाल लिया। पीड़ित राजेश कुमार का कहना हैं कि ये बहुत दबंग और बईमान ब्यक्ति हैं, मजदूरी करा कर मजदूरी नहीं देता और मजदूरी मांगने पर गाली-गलौज व मरता -पिटता हैं। पीड़ित ब्यक्ति प्रशासन से अपनी जान, माल और सम्मान की सुरक्षा चाहता हैं। पीड़ित राजेश कुमार ने मेजा थाना प्रभारी को लिखित शिकायत दी है। थाना प्रभारी ने तत्काल रामनगर चौकी प्रभारी को मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

मुतवल्लियों की मदद के लिए दरगाह पर लगाया गया वफ़्क़ हेल्प कैंप

बरेली।

हुकूमत द्वारा वफ़्क़ संपत्तियों का रजिस्ट्रेशन उम्मीद पोर्टल पर दर्ज़ करने की प्रकिया चल रही है। जिसकी आखिरी तारीख 05 दिसम्बर है। मस्जिदों, मदरसों, दरगाहों, खानकाहों, कब्रिस्तानों व मकतब के बहुत से मुतवल्लियों ने जानकारी के अभाव में अब तक रजिस्ट्रेशन नहीं कराए है। इसकी मदद के लिए आज दरगाह आला हज़रत परिसर में तहरीक ए तहफ्फुज सुन्नियत (टीटीएस) की ओर से दरगाह आला हज़रत के सज्जादानशीन बदरूशरिया मुफ्ती अहसन मियां की सदारत (अध्यक्षता) में वक्फ हेल्प कैंप लगाया गया। वफ़्क़ बोर्ड को ऑर्डिनेटर बरेली हाजी फैज़ मंसूरी व आलेनबी ने बताया कि कैंप में बहुत से ऐसे लोग आए जिनके पास संपत्तियों के कागज नहीं थे। उनको मशवरा दिया गया कि वो अपने कागज़ तलाशे। दरगाह से जुड़े नासिर कुरैशी ने बताया कि कैंप में बहेड़ी,आंवला,मीरगंज,नवाबगंज समेत शहर भर से लगभग 200 मुतावल्ली पहुंचे। प्रदेश के अन्य जिले कानपुर, शाहजहांपुर, मुरादाबाद, पीलीभीत, आगरा, झांसी आदि से फोन कॉल आई। जिन्हें वफ्फ संबंधित जानकारी दी गई। वहीं जो लोग अपने कागज़ साथ लाए थे उनके तुरंत अदनान हुसैन और इशरत नूरी ने उम्मीद पोर्टल पर संपत्ति दर्ज़ कराई। जो लोग रह गए है उन्हें सलाह दी गई कि वो लोग दरगाह द्वारा दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर राब्ता (सम्पर्क) कर सकते है। वहीं 24 नवम्बर दिन पीर(सोमवार) को अगला कैंप काकर टोला स्थित छः मीनारा मस्जिद में शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक लगाया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें 9897070701 इसके अलावा सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन मियां ने सभी से अपील करते हुए कहा उम्मीद पोर्टल के अलावा देश के कई सूबे में एसआईआर की भी प्रकिया चल रही है। बीएललो घर घर जाकर फॉर्म उपलब्ध करा रहे है। लोग जल्द से जल्द फॉर्म भर कर जमा करे। कैंप में शाहिद नूरी, मुजाहिद रज़ा,परवेज़ नूरी, सय्यद माजिद, अदनान हुसैन, औरंगज़ेब नूरी, काशिफ सुब्हानी, अजमल नूरी, इशरत नूरी आदि मौजूद रहे।

एसआईआर कार्यक्रम में ज़िम्मेदार लोग व्यापक स्तर पर लोगों की सहायता में सक्रिय

फतेहपुर।

निर्वाचन आयोग के निर्देशों के तहत संचालित एसआईआर कार्यक्रम में सहयोग सुनिश्चित कराने के लिए मोहम्मदपुर गौंती क्षेत्र में एसआईआर फ़ॉर्म भरने का अभियान तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। स्थानीय टीम गांव-गांव जाकर नागरिकों को दस्तावेज़ों से संबंधित सहायता और आवश्यक जानकारी उपलब्ध करा रही है। जमात ए इस्लामी हिंद, फतेहपुर के नाजिम-ए-ज़िला अब्दुल रहमान की नेतृत्व में कारकुन मजाज़ अहमद, मोहम्मद आरिफ, मुशाहिब इमरान, ज़ुबैर अहमद, हाफ़िज़ अब्दुल वहीद, महताब, उत्तर प्रदेश युवा मंच के कार्यकर्ता खुबैब अहमद, मो आज़िम, मोहम्मद हस्सान, मज़क्किर, वालीद सहित कई स्थानीय ज़िम्मेदार लोग व्यापक स्तर पर लोगों की सहायता में सक्रिय हैं। टीम विशेष रूप से उन नागरिकों तक पहुँच बना रही है जिन्हें स्ट्रक फ़ॉर्म भरने या दस्तावेज़ अपडेट करने में कठिनाई होती है।

यह पूरा अभियान जमात-ए-इस्लामी हिन्द की मर्कज़ी मुहिम हक़ूक़-ए-हमसाया से सम्बद्ध है, जिसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उसके लोकतांत्रिक अधिकारों की सुरक्षा और जागरूकता से जोड़ना है।

अभियान के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि योग्य मतदाताओं का नाम सही रूप में मतदाता सूची में शामिल हो सके। स्थानीय जिम्मेदारों ने कहा कि इस कार्यक्रम का मूल लक्ष्य लोगों को वोटर सूची में नाम जोड़ने, सुधार कराने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। मोहम्मदपुर गौंती क्षेत्र में यह अभियान शांतिपूर्ण, संगठित और अत्यंत जनोपयोगी ढंग से चलाया जा रहा है।

स्वयंसेवक घर-घर जाकर जनजागरूकता फैला रहे हैं और नागरिकों को आवश्यक प्रक्रिया में पूरा सहयोग प्रदान कर रहे हैं। जमात-ए-इस्लामी हिन्द की स्थानीय इकाई ने आशा व्यक्त की है कि अधिक से अधिक लोग इस मुहिम से जुड़कर अपने संवैधानिक अधिकारों को और मजबूत करेंगे।

पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार, शांतिपूर्ण समाज की बुनियाद है- एजाज़ असलम

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद द्वारा 'आदर्श समाज के निर्माण में पड़ोसी की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी

लखनऊ। पड़ोसी समाज एक छोटी लेकिन बहुत महत्वपूर्ण इकाई है। इस्लाम में पड़ोसियों के अधिकारों को विशेष महत्व दिया गया है और इसे शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण समाज की नींव बताया गया है। कुरआन में स्पष्ट आदेश है कि मोमिन न केवल अपने क़रीबी पड़ोसियों, बल्कि सहकर्मियों, हमसफर लोगों और यहाँ तक कि सड़क पर साथ चलने वालों के साथ भी अच्छे व्यवहार से पेश आएँ। इन विचारों को जमाअत-ए-इस्लामी हिंद की सलाहकार समिति के मेंबर और रेडियंस के चीफ एडिटर एजाज़ असलम ने आज लखनऊ में जमाअत ए इस्लामी हिंद शहर इकाई द्वारा आयोजित संगोष्ठी में अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने 'पड़ोसियों के अधिकार' विषय पर देश भर में 10 दिवसीय मुहिम की शुरुआत की है, जो 'आदर्श पड़ोस से आदर्श समाज' के नारे के साथ पूरे देश में चलाई जा रही है। इस मुहिम का उद्देश्य लोगों में पड़ोसियों के प्रति भलाई, सहयोग और अच्छे संबंधों की भावना को फिर से जीवित करना और सामाजिक संबंधों को मज़बूत बनाना है। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद पूर्वी यूपी के सचिव मौलाना अतीकुर्रहमान इस्लाही ने कहा कि एक समाज जो अच्छे पड़ोस और सौहार्द पर स्थापित हो, वह अपने आप ही एक आदर्श समाज बन जाता है। जब लोग अपने पड़ोसियों के साथ नरमी, सहनशीलता और इंसाफ से पेश आते हैं तो इसका सकारात्मक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। संगोष्ठी में अपने विचार रखते हुए बी.आर. बौद्ध ने कहा कि हर धर्म में अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा दी गई है। आज के डिजिटल दौर में लोग आपस में मिलना-जुलना कम करते जा रहे हैं। हमें इतना व्यस्त नहीं हो जाना चाहिए कि अपने पड़ोस की खबर भी न रहे। हमें अपने आसपास के लोगों से अच्छे संबंध बनाने चाहिए और उनके दुख-सुख में शामिल होना चाहिए। इसके अलावा संगोष्ठी में तारिक शफीक, ज़ीशान सिद्दीकी, मोहम्मद यूनुस और आकिब रऊफ ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

खौफ का साया: देश की राजधानी में कुत्तों के बाद अब बंदरों के हमले, पूर्वी दिल्ली में आमजन की मुश्किलें दोगुनी

पूर्वी दिल्ली । पूर्वी दिल्ली की गलियों में अब हर कदम पर खौफ का साया मंडरा रहा है। जहां पहले आवारा कुत्तों से लोग परेशान थे, वहीं अब बंदरों का आतंक आमजन की जिंदगी को और मुश्किल बना रहा है। सुबह-सुबह घर से निकलना हो या बाजार में खरीदारी करना, हर जगह बंदरों के हमले का डर लोगों को सताता है। पीछा करना, काट लेना और हाथ से सामान छीनकर भाग जाना जैसी घटनाएं अब रोजमर्रा का हिस्सा बन चुकी हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इन हालातों के बावजूद दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही है, जिससे लोगों में दहशत और नाराजगी दोनों बढ़ती जा रही है। पांडव नगर, मयूर विहार, न्यू अशोक नगर, राम नगर और जाफराबाद समेत अन्य इलाकों में रहने वाले लोगों ने बताया आए दिन बंदर घरों के बाहर तोड़-फोड़ करते हैं। बालकनी में रखे फूलों के गमले नीचे गिरा देते हैं। घर के बाहर धूप में सूख रहे कपड़े लेकर भाग जाते हैं। उसे गंदा कर देते हैं। पक्षियों के लिए रखा गया दाना-पानी भी इधर-उधर फेंक देते हैं। बंदरों की वजह से पार्कों में टहलने और सर्दी में धूप सेकने से भी लोग बचते हैं। बंदरों का झुंड पार्कों में आकर बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को परेशान करते हैं। भगाने की कोशिश करने पर बंदर आक्रामक हो जाते है और हमला कर देते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि आए दिन बंदर लोगों को काट रहे हैं, लेकिन प्रशासन मूक दर्शक बना हुआ है। पांडव नगर स्थित रामलीला पार्क में तीन चार बंदरों ने मंगलवार को पार्क में टहल रहे सुशील कुमार को काट लिया था। उन्हें लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से उसे राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल भेज दिया गया।

बंदर झुंड बनाकर आते है और लोगों पर हमला कर देते हैं। अब घर से बाहर निकलने में भी डर लगता है। - - रूपेंद्र प्रकाश शर्मा, पांडव नगर

बंदरों के काटने के बाद अभी दो टीके लगे हैं। डॉक्टरों ने बताया कि अभी दो टीके और लगेंगे। -- सुशील कुमार

बंदरों से लोगों में डर का माहौल है। वे झुंड बना कर आते है और सामान की तोड़-फोड़ कर चले जाते हैं। -- एके गुप्ता, मयूर विहार

लोगों के हाथों से सामान छीन कर भाग जाते है। कई बार वे आक्रामक होकर हमला भी कर देते हैं। - लोकेश पांचाल, राम नगर एक्टेंशन

क्या कहते हैं डॉक्टर..

बंदर और कुत्ते के काटने पर घाव वाली जगह को पानी और साबुन या फिर डेटॉल से अच्छे तरीके से धो लेना चाहिए। इसके बाद जल्द से जल्द डॉक्टरों को दिखाना चाहिए।

नोटबंदी-लॉकडाउन की तरह ही एसआईआर को जल्दबाजी में लागू किया गया- कांग्रेस

नई दिल्ली । अलग-अलग राज्यों में कुछ बूथ लेवल अफसरों की मौत की खबरें सामने आई हैं। इनमें से कई मौतों के पीछे एसआईआर के काम के भारी दबाव को वजह बताया जा रहा है। अब इसे लेकर राजनीति शुरू हो गई है। कांग्रेस पार्टी ने इसे लेकर सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि काम का बोझ बीएलओ और पोलिंग अफसरों को आत्महत्या के लिए मजबूर कर रहा है। कांग्रेस ने दावा किया कि एसआईआर को जल्दबाजी में लागू किया गया और ये नोटबंदी और लॉकडाउन के फैसलों की याद दिलाता है।

खरगे का आरोप- चुनाव आयोग मूकदर्शक बनकर देख रहा

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि भाजपा की वोट चोरी अब जानलेवा हो गई है। खरगे ने एक्स पर साझा एक पोस्ट में दावा किया कि 19 दिनों में, मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के दौरान 16 बीएलओ की मौत हो गई है। काम का बोझ बीएलओ और पोलिंग अफसरों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर रहा है। खरगे ने लिखा कि, हर उस परिवार के साथ मेरी गहरी संवेदनाएं है जिन्होंने अपनों को खोया है। जमीनी हकीकत के हिसाब से, यह संख्या बताई गई संख्या से कहीं ज्यादा है, जो बहुत चिंता की बात है। इन परिवारों को इंसाफ कौन दिलाएगा? उन्होंने आरोप लगाया, भाजपा चोरी की सत्ता का मजा ले रहे है, जबकि चुनाव आयोग मूकदर्शक बनकर देख रहा है।

लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा

खरगे ने दावा किया, एसआईआर को जल्दबाजी में, बिना किसी योजना के जबरदस्ती लागू करना नोटबंदी और कोरोना लॉकडाउन की याद दिलाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की सत्ता की भूख संस्थाओं को आत्महत्या करने,

बीएलओ की मौतों पर मल्लिकार्जुन खरगे का हमला

संविधान को खत्म करने और सत्ता का गलत इस्तेमाल करके लोकतंत्र को कमजोर करने पर मजबूर कर रही है। खरगे ने कहा, बस बहुत हो गया! अगर हम अब भी नहीं जागे, तो लोकतंत्र के आखिरी खंभों को गिरने से कोई नहीं बचा सकता। जो लोग एसआईआर और वोट चोरी पर चुप रहते हैं, वे इन बेगुनाह बीएलओ की मौत के लिए जिम्मेदार हैं। शनिवार को पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में बूथ लेवल ऑफिसर के तौर पर काम करने वाली एक महिला शनिवार को अपने घर पर मृत मिली। उसके परिवार वालों का कहना है कि वह एसआईआर काम से जुड़े बहुत ज्यादा तनाव में थी और उसने सुसाइड कर लिया।

युद्ध का मैदान भी हमारे लिए 'धर्मक्षेत्र, सीएम योगी ने कहा- जहां धर्म व कर्तव्य होगा वहीं जय होनी है

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को कहा कि युद्ध का मैदान भी हमारे लिए ''धर्मक्षेत्र है और जहां धर्म व कर्तव्य होगा, वहीं जय होनी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत की उपस्थिति में रविवार को यहां जनेश्वर मिश्र पार्क में आयोजित 'दिव्य गीता प्रेरणा उत्सव को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा, ''पूरे भारत को हमने धर्मक्षेत्र माना, इसलिए युद्ध का मैदान भी हमारे लिए धर्मक्षेत्र ही है। मुख्यमंत्री ने कहा, ''कर्तव्यों से जुड़ा क्षेत्र है और धर्मक्षेत्र में जो युद्ध लड़ा जा रहा है, वह कर्तव्यों के लिए लड़ा जा रहा है। यही भाव सामने आता है तो अंत में परिणाम यह होता है कि जहां धर्म और कर्तव्य होगा, वहीं विजय होगी, इससे इतर कुछ नहीं हो सकता। योगी आदित्यनाथ ने कहा, ''किसी को गुरुर नहीं पालना चाहिए कि अधर्म के मार्ग पर चलकर विजय प्राप्त हो जाएगी। यह भारत के सनातन धर्म की परंपरा है कि प्रकृति का अटूट नियम है, सदैव से यही होता आया है। इसलिए हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा, ''दुनिया के अंदर कोई जगह नहीं होगी, जहां युद्ध का मैदान धर्मक्षेत्र के रूप में जाना जाता हो, लेकिन हमारे यहां हर कर्तव्य को पवित्र भाव से माना गया है। मुख्यमंत्री ने नसीहत देते हुए कहा, ''अच्छा करेंगे तो पुण्य के भागीदार बनेंगे और बुरा करेंगे तो पाप के भागीदार बनेंगे। ऐसा जब हर धर्मावलंबी सोचता है तो वह अच्छा करने का प्रयास करता है। योगी आदित्यनाथ ने कहा, ''भारत ने विश्व मानवता को प्राचीन काल से संदेश दिया है। हमने कभी यह नहीं कहा कि हम जो कह रहे वही सही है, हमारी ही उपासना विधि सर्वोत्तम है। हमने सब कुछ होते हुए भी कभी अपनी श्रेष्ठता का डंका नहीं पीटा। उन्होंने कहा, ''जो आया उसे शरण दिया, जिसके ऊपर विपत्ति आई, उसके साथ खड़े हो गए। जियो और जीने दो की प्रेरणा किसी ने दी है तो वह भारत की भूमि ने दी है। वसुधैव कुटुंबकम की प्रेरणा भी भारत की धरती ने ही दी है। आयोजन के मुख्य वक्ता स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने कहा कि लोगों के मन में सवाल हो सकता है कि आयोजन का प्रयोजन क्या है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह किसी प्रकार का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि प्रेरणा है और जिसे गीता संस्था एक आह्वान है। स्वामी ज्ञानानंद ने कहा, ''जियो गीता, गीता के साथ जीने की आदत बनाने की प्रेरणा है। समय की आवश्यकता है और भौतिकवाद ने कई संसाधन दिए हैं, लेकिन इसके साथ समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। पूरे विश्व में अलग-अलग प्रकार से महाभारत फिर से दिखाई दे रहा है। समाधान क्या है? उस महाभारत में गीता का उपदेश दिया गया था।

राजधानी लखनऊ के दिव्य गीता प्रेरणा उत्सव को संबोधित करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता देश के 140 करोड़ लोगों के लिए आवश्यक है। कार्यक्रम में संघ प्रमुख मोहन भागवत भी मौजूद रहे।

चंडीगढ़ का स्टेटस बदलने पर केंद्र का यू-टर्न

इस संसद सत्र में नहीं ला रहे; बिल से पंजाब-हरियाणा से संबंधों पर फर्क नहीं

नई दिल्ली । केंद्र सरकार द्वारा केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ को संविधान के अनुच्छेद 240 के तहत लाने पर विचार करने की अफवाहों पर पंजाब में बढ़ते राजनीतिक विरोध के बीच केंद्रीय गृह मंत्रालय ने शनिवार को एक आधिकारिक स्पष्टीकरण जारी किया। पीआईबी द्वारा गृह मंत्रालय की ओर से एक्स पर साझा की गई एक आधिकारिक पोस्ट में, सरकार ने कहा कि चंडीगढ़ के लिए केंद्रीय कानून बनाने की प्रक्रिया को सरल बनाने का प्रस्ताव केवल विचाराधीन है और इस पर अभी तक कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है। मंत्रालय ने इस बात पर जोर दिया कि इस प्रस्ताव का उद्देश्य चंडीगढ़ की वर्तमान शासन व्यवस्था को बदलना या पंजाब अथवा हरियाणा के साथ उसके पारंपरिक संबंधों को प्रभावित करना नहीं है। बयान में कहा गया, यह प्रस्ताव विशेष रूप से केंद्र सरकार द्वारा केंद्र शासित प्रदेश के लिए कानून बनाने की प्रक्रिया को सुगम बनाने के संबंध में है और यह अभी भी केंद्र सरकार के उच्च स्तर पर विचाराधीन है।

पहले के एक संसदीय बुलेटिन के अनुसार, इस प्रस्ताव में चंडीगढ़ को विधानसभा रहित अन्य केंद्र शासित प्रदेशों जैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव, और पुडुचेरी (उस समय जब इसकी विधानसभा भंग हो) के समान श्रेणी में लाने की मांग की गई थी। इस कदम से पूरे पंजाब में कड़ा विरोध हुआ था, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों ने केंद्र सरकार पर चंडीगढ़ पर पंजाब के लंबे समय से चले आ रहे दावे को कमजोर करने की कोशिश करने का आरोप लगाया था।

भारत के 53वें चीफ जस्टिस का शपथ ग्रहण समारोह आज , कई देशों के मुख्य न्यायधीश होंगे शामिल

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत के 53वें प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) के रूप में न्यायमूर्ति सूर्यकांत की नियुक्ति को 30 अक्टूबर को मंजूरी दे दी थी.

नई दिल्ली । भारत के 53वें प्रधान न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) के रूप में शपथ लेने वाले जस्टिस सूर्यकांत सोमवार को शपथ ग्रहण करेंगे. उनके शपथ ग्रहण समारोह में भारत के गणमान्य हस्तियों के अलावा साथ अलग-अलग देश के सुप्रीम कोर्ट के जज भी शामिल होंगे. नामित प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने शनिवार को कहा कि देशभर की अदालतों में लंबित पांच करोड़ से अधिक मामलों का बोझ घटाना और विवाद समाधान के वैकल्पिक तरीके के रूप में बेहद प्रभावी मध्यस्थता को बढ़ावा देना न्यायपालिका प्रमुख के रूप में उनकी प्राथमिकता होगा. भूटान के मुख्य न्यायाधीश ल्योंपो नॉर्बू शेरिंग्ब्राजील के मुख्य न्यायाधीश एडसन फाचिनकेन्या के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मार्था कूम और केन्या सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस सुसान नजोकी मलेशिया मलेशिया के संघीय न्यायालय के जज जस्टिस टैन श्री दातुक नालिनी पाथमनाथनमॉरीशस की मुख्य न्यायाधीश बीबी रेहाना मुंगली-गुलबुलनेपाल के मुख्य न्यायाधीश प्रकाश मान सिंह राउत के साथ नेपाल सुप्रीम कोर्ट की जज सपना प्रधान मल्ला और नेपाल के सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज अनिल कुमार सिन्हाश्रीलंका के मुख्य न्यायाधीश पी. पद्मन सुरेसन के साथ श्रीलंका सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस एस. थुरैराजा, पीसी और जस्टिस ए एन एम डी नवाज शामिल होंगे न्यायमूर्ति बीआर गवई रविवार (23 नवंबर) को पदमुक्त हो गए. भारत के 52वें प्रधान न्यायाधीश गवई ने अपने छह महीने के कार्यकाल के दौरान कई महत्वपूर्ण फैसले दिए हैं, जिनमें वक्फ कानून के प्रमुख प्रावधानों पर रोक लगाना, न्यायाधिकरण सुधार कानून को रद्द करना और केंद्र को परियोजनाओं को बाद में हरित मंजूरी देने की अनुमति देना शामिल है. शुक्रवार का दिन प्रधान न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति गवई का अंतिम कार्य दिवस था. वह न्यायमूर्ति केजी बालाकृष्णन के बाद भारतीय न्यायपालिका का नेतृत्व करने वाले दूसरे दलित न्यायाधीश थे.

ध्वजारोहण समारोह : स्वस्ति वाचन और पुष्प वर्षा से पीएम मोदी की होगी शाही अगवानी

अयोध्या । रामनगरी अयोध्या स्थित राम मंदिर में 25 नवंबर को होने वाले ध्वजारोहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जाने का रूट एसपीजी की मंजूरी के बाद फाइनल हो गया है। पीएम मोदी 25 नवंबर को महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से हेलीकॉप्टर से साकेत कॉलेज में बने हेलीपैड पर आएंगे।

यहां से रामपथ से होते हुए जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य द्वार से श्रीराम जन्मभूमि में प्रवेश करेंगे। साकेत महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर अयोध्या की वैदिक परंपरा के अनुसार पीएम मोदी के भव्य स्वागत के लिए स्वस्ति वाचन होगा। 501 बटुक ब्राह्मणों द्वारा स्वस्ति वाचन, संत-महंतों के शंखनाद और घंटा-घड़ियाल की पवित्र ध्वनि के मध्य प्रधानमंत्री का स्वागत किया जाएगा।

सात स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा

साकेत महाविद्यालय से रामजन्मभूमि के गेट नंबर-11 यानी जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य द्वार तक रामपथ के दोनों ओर खड़े अयोध्यावासी पुष्पवर्षा के माध्यम से पीएम का अभिनंदन करेंगे। स्वागत के लिए 12 मंच बनाए जाएंगे। वहां से पुष्प वर्षा की जाएगी। स्वागत पथ पर सात स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के ध्वजारोहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वागत में दो दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का भी आयोजन होगा। इस उत्सव में भारतीय परंपराओं, अध्यात्म और लोक कलाओं का प्रदर्शन किया जाएगा। इस अवसर पर संगीत, नृत्य, लोक कलाओं व पारंपरिक वाद्य यंत्रों की प्रस्तुतियां मुख्य आकर्षण होंगी। भजन गायन से लेकर ब्रज की पारंपरिक लोक धुनों तक और प्रदेश के विभिन्न अंचलों के लोक गायन

गूंजेगी शंख व घंटा घड़ियाल की ध्वनि

दल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सुरों में पिरोकर प्रस्तुत करेंगे। शहनाई, सारंगी, पखावज, बांसुरी, सरोद और सितार जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों की विशेष प्रस्तुतियां आयोजन को आध्यात्मिक आभा से आलोकित करेंगी। संस्कृति विभाग के प्रयास से ध्वजारोहण कार्यक्रम के साक्षी बन रहे लोगों को प्रदेश के पारंपरिक लोक नृत्य और शास्त्रीय कलाओं की अद्भुत छटा देखने को मिलेगी। प्रदेश के विविध सांस्कृतिक रंग भव्य शोभायात्रा के रूप में नजर आएंगे। एक ही मंच पर मयूर, राई, फरूवाही, बधावा, अवधी, करमा, ढेड़िया, धोबिया, कहरवा, चनटांगिया और बारहसिंघा जैसे लोकनृत्य इस आयोजन का विशेष आकर्षण होंगे। शास्त्रीय नृत्य की श्रेणी में कथक की मनोहारी प्रस्तुति दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेगी।

राजस्थान में अचानक फैली जहरीली हवा! 15 बच्चों समेत 22 लोग हुए बीमार, सांस लेने में दिक्कत के बाद अस्पताल में भर्ती

सीकर । रविवार को राजस्थान के सीकर जिले में अचानक जहरीली हवा फैलने से इलाके में हड़कंप मच गया। सुबह के समय कई लोगों को अचानक सांस लेने में दिक्कत, सीने में जलन और चक्कर आने जैसी समस्याएं होने लगीं। स्थिति बिगड़ती देख आसपास के लोग तुरंत मरीजों को अस्पताल लेकर पहुंचे। सीकर के एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट रतन लाल के अनुसार, कुल 22 लोगों, जिनमें 15 बच्चे शामिल हैं, को अस्पताल में भर्ती किया गया है। डॉक्टरों ने बताया कि सभी मरीजों की स्थिति फिलहाल स्थिर है और उनमें से कई को प्राथमिक उपचार के बाद राहत मिली है। घटना के बाद प्रशासन ने तुरंत कार्रवाई करते हुए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम को

मौके पर तैनात कर दिया। टीम हवा और आसपास के क्षेत्रों से सैंपल लेकर जांच कर रही है कि जहरीली गैस का स्रोत क्या था। डीएम रतन लाल ने कहा कि पहली नजर में यह मामला पास ही एक भट्ठी में कपड़े जलाए जाने से जुड़ा लग रहा है, जिससे जहरीला धुआं हवा में फैल गया। हालांकि,अधिकारी अभी विस्तृत जांच रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं। अचानक हुई इस घटना से स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। प्रशासन ने आसपास के निवासियों से कुछ समय तक घरों के अंदर रहने और जरूरत पड़ने पर ही बाहर निकलने की अपील की है। क्षेत्र में निगरानी भी बढ़ा दी गई है ताकि ऐसी स्थिति दोबारा न हो।

बीजेपी टिकट नहीं देगी तो भी चुनाव हर हाल में लड़ेंगे - बृजभूषण शरण सिंह

गोण्डा । कैसरगंज के पूर्व सांसद और यूपी की राजनीति में हमेशा चर्चा में रहने वाले बृजभूषण शरण सिंह ने एक बार फिर एक बड़ा बयान दे दिया है। उन्होंने कहा कि, वह अगला लोकसभा चुनाव हर हाल में लड़ेंगे। उन्होंने लोकसभा चुनाव 2029 को लेकर ये बयान दिया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी टिकट देगी तो भी लड़ेंगे, और नहीं देगी तो पैदल भी चुनाव मैदान में उतरेंगे। उनके इस बयान से प्रदेश की राजनीति में नई हलचल मच गई है, क्योंकि देवीपाटन मंडल में उनकी पकड़ अब भी बहुत मजबूत मानी जाती है। बृजभूषण ने कहा कि वह 2027 के विधानसभा चुनाव में कोई भूमिका नहीं निभाने वाले है और

न ही वह कहीं से उम्मीदवार बनने की सोच रहे है। उनका पूरा ध्यान सिर्फ 2029 के लोकसभा चुनाव पर है। उनका कहना है कि उनके क्षेत्र के लोग आज भी उन्हें अपना सांसद मानते है और उन्हें रिटायर नहीं करना चाहते।

2029 का चुनाव हर हाल में लड़ूंगा

बृजभूषण ने कहा, -मेरे क्षेत्र की जनता मुझे रिटायर नहीं करना चाहती थी। पार्टी ने मेरे बेटे को टिकट दिया, और मैंने फैसला मान लिया। लेकिन जनता आज भी मुझे सांसद के रूप में देखना चाहती है। इसलिए 2029 का चुनाव मैं जरूर लड़ूंगा। बृजभूषण सिंह ने आगे कहा कि -मैंने तय किया है कि 2029 का चुनाव मैं लड़ूंगा। बीजेपी लड़ाएगी तो लड़ेंगे, नहीं लड़ाएगी तो पैदल लड़ेंगे।- उन्होंने यह भी कहा कि जो लोग उनके बयानों को सुनकर यह मानते है कि वह समाजवादी पार्टी की ओर झुकाव रखते हैं, वे पूरी तरह गलत है।

अगला नंबर 'ममता दीदी' और फिर सपा बहादुर अखिलेश का है : केशव मौर्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समाजवादी पार्टी (सपा) के मुखिया अखिलेश यादव द्वारा भाजपा सरकार और निर्वाचन आयोग पर साजिश रचने का आरोप लगाने के एक दिन बाद रविवार को संकेत दिया कि अगले चुनावों में पश्चिम बंगाल और फिर उत्तर प्रदेश में महागठबंधन को पराजय का सामना करना पड़ेगा। उप मुख्यमंत्री मौर्य ने अपने आधिकारिक 'एक्स' खाते पर एक पोस्ट में कहा, बिहार चुनाव के दरम्यान खुद गोता लगाने के साथ श्री राहुल गांधी ने श्री तेजस्वी यादव को लपेटे में लेकर महागठबंधन का भविष्य भी लिख दिया। बिहार विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सह प्रभारी रहे मौर्य ने पोस्ट में

लिखा, अगला नंबर ममता दीदी जी (पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी) और फिर सपा बहादुर श्री अखिलेश यादव का है। बिहार विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने दो तिहाई बहुमत से जीत हासिल की और इंडिया गठबंधन के दलों को बहुत पीछे धकेल दिया।

हैदराबाद एयरपोर्ट पर मिली बम की धमकी, बहरीन की फ्लाइट मुंबई डायवर्ट

राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट को एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिली है, जिसके बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर आ गईं। इस धमकी भरे ईमेल के कारण बहरीन से हैदराबाद आ रही एक अंतर्राष्ट्रीय उड़ान को मुंबई डायवर्ट करना पड़ा। बम की धमकी मिलने के बाद अधिकारियों ने तत्काल कदम उठाए। यह फ्लाइट आज (23 नवंबर) सुबह 11:31 बजे मुंबई में सुरक्षित लैंड हुई। एयरपोर्ट के कस्टमर सर्विस डिपार्टमेंट को शुक्रवार को यह धमकी भरा ईमेल मिला।

क्रिकेटर स्मृति मंधाना की शादी फिलहाल टली, पिता को हार्ट अटैक

नई दिल्ली । स्मृति मंधाना और पलाश मुछाल की शादी टल गई है। इसकी जानकारी भारतीय महिला टीम की उपकप्तान के मैनेजर ने रविवार को दी। मंधाना के मैनेजर तुहिन मिश्रा ने मीडिया से कहा, आज सुबह जब वह (स्मृति के पिता) नाश्ता कर रहे थे, उनकी तबीयत खराब होने लगी थी। थोड़ी देर हमने इंतजार किया कि वह ठीक हो जाएं, लेकिन स्थिति थोड़ी बिगड़ रही थी। हमने इसके बाद जोखिम नहीं लिया और फटाफट एंबुलेंस को बुलाया और उनको अस्पताल ले गए। अभी वह डॉक्टरों की निगरानी में है। मंधाना अपने पिता

के काफी करीब है तो उन्होंने फैसला लिया है कि जब तक उनके पिता ठीक नहीं हो जाते, तब तक के लिए आज होने वाली शादी को अनिश्चितकाल के लिए टाला जाएगा। मंधाना की पिता की सेहत पर तुहिन ने कहा, अभी वह निगरानी में हैं। डॉक्टर ने बोला है कि उन्हें अभी अस्पताल में ही रहना होगा। हम सभी अभी सदमे में हैं। हम सभी चाहते है कि वह जल्द स्वस्थ हो जाएं। मंधाना बहुत स्पष्ट है कि पहले वह अपने पिता को ठीक होते देखेंगी और फिर शादी करेंगी। फिलहाल शादी अनिश्चिकाल के लिए टाल दी गई है।

मैं गुजारिश करूंगा कि सभी मंधाना की निजता का ध्यान रखें।

कल होनी थी शादी

स्मृति और पलाश की शादी आज महाराष्ट्र के सांगली में होनी थी। हालांकि, शादी से ठीक पहले महिला क्रिकेटर के पिता की अचानक तबीयत बिगड़ गई जिसके बाद शादी को अनिश्चितकाल के लिए टाल दिया गया है।

अनिल विज बोले- लेबर और इंडस्ट्री के बीच संबंध बेहतर होना बेहद जरूरी, कांग्रेस पर भी साधा निशाना

अंबाला। मोदी सरकार द्वारा लेबर कोर्ट में किए गए बड़े सुधारों पर हरियाणा के श्रम मंत्री अनिल विज ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि किसी भी देश की तरक्की के लिए लेबर और इंडस्ट्री के बीच संबंध बेहतर होना बेहद जरूरी है। विज ने बताया कि देश में कई श्रम कानून अत्यंत पुराने थे, जिन्हें अब बदलकर आधुनिक परिस्थितियों के अनुसार बनाया गया है। उन्होंने कहा कि पहले के कानूनों में महिलाओं के नाइट ड्यूटी करने पर पाबंदी थी, जिसे अब कुछ शर्तों के साथ हटाया गया है। इसके साथ ही -इक्वल वर्क, इक्वल पे- का फार्मूला भी लागू किया गया है। मजदूरों को सैलरी, काम के समय और अन्य अधिकार सुनिश्चित कराने के लिए केंद्र सरकार ने चार नए कानून पास किए है। सरकार के नए कानूनों के तहत हर कर्मचारी चाहे वह इंडस्ट्री में काम करता हो या किसी दुकान में को अनिवार्य रूप से एम्प्लॉयमेंट लेटर दिया जाएगा। इस पर विज ने कहा कि एम्प्लॉयमेंट लेटर मिलना हर कर्मचारी का अधिकार है। जब उनसे पूछा गया कि कांग्रेस ने अपने कार्यकाल में श्रमिकों के लिए क्या कार्य किए, तो अनिल विज ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस ने हमेशा बड़े-बड़े सेठों का साथ दिया है और कभी भी आम मजदूर या आम आदमी के हित में काम नहीं किया। विज ने कहा कि कांग्रेस की पुरानी तस्वीरें उठाकर देख लो , उनके आस-पास सिर्फ उद्योगपति ही दिखाई देंगे, आम आदमी उनके पास जाने में भी हिचकिचाता था।